Chapter in Edited Book : *(Please enclose the documentary evidence for your claim)*

S. No	Chapter title with page nos.	Book title & Publisher	ISSN/ISBN No.	Authorship: Sole Author/Co-author/Editor	No. of authors	Academic/Research Score	Score verified by the Committee
1	Mijaz thumri ka, 2020	Samvaadi, Jyoti - Jaunpur	Under Publication	Sole	1	5	
2	Shaikshik Paridrishya mein kalaon ke samanvyay ki aavashyakta, 2019	Inculcating Sustainable Development through Higher Education : An Overview, VKM, Kamachha, Varanasi	Under Publication 97-93-87 199-96-5	Sole	1	5	
3	Bhoomi adigrahan se prabhavit sangeetik sanskriti, 2018	Bhoomi Adhikaar evam Adhigrahan ke Prashna, VKM, Kamachha, Varanasi	Under Publication 978-93-88007-44-8	Sole	1	5	
4	Swami Vivekanand ke Adhyaatmik anugunj mein	Vasant Kanya Mahavidyalay, Kamachha	Under Publication	Sole	1	5	

कला संस्कृति के विविध संदर्भ

संपादक

डॉ. ज्योति सिनहा

विषय क्रम

हिन्दी लेख

काव्य और संगीत की एकात्मकता — 11
डॉ. विजयश्री शर्मा

वनस्पति, पेड़-पौधों की संगीत के प्रति संवेदनशीलता — 18
डॉ. सतीश वर्मा

कोई गाए, कोई और कमाए — 25
निर्मल सेनगुप्त

लोक कलाओं का अध्ययन क्यों और कैसे? — 31
प्रो. ए. अच्युतन

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्द्धन — 35
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव

कश्मीर की उत्पत्ति का आख्यान — 44
अग्निशेखर

आत्मनिर्भर भारत का निर्माण सोच बदलने का प्रयास — 50
डॉ. चन्द्रभूषण पाठक

वैश्विक कोरोना संकट और भारतीय कला एवं संस्कृति के सकारात्मक मूल्य — 55
डॉ. गीता सिंह

बदलता भारतीय शैक्षिक स्वरूप भविष्य का आवाह्न — 60
डॉ. नीता तिवारी

प्राकृतिक आपदा एवं प्रबन्धन के क्षेत्र में मध्यकालीन भारतीय शासकों की नीतियाँ — 68
डॉ. प्रवीन श्रीवास्तव

मिज़ाज ठुमरी का — 77
डॉ. सीमा वर्मा

मिज़ाज ठुमरी का

डॉ. सीमा वर्मा
असोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन,
बसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा (सम्बद्ध का.हि.वि.वि) वाराणसी

सृजन एक संधि मात्र है, जो पुरातन को नवीन से और नवीन को पुरातन से जोड़ता है, इसी प्रकार वर्तमान वह संधि है जो भूत को भविष्य से और भविष्य को भूत से जोड़ती है इस प्रक्रिया में यदि सौन्दर्य का चिन्तन करे तो सौन्दर्य न भूत है, न वर्तमान, न ही भविष्य अपितु यह तीनों ही भावनाओं में एकरस होकर व्याप्त है। संगीत का सौन्दर्य इसलिये व्यक्ति, समाज, सभ्यता और संस्कृति का उत्कर्ष एवं संरक्षण करता है। समस्त कलाओं में केवल संगीत ही एक ऐसी कला है जिसे अपना मूलस्वरूप प्रकट करने के लिए केवल संतुलित नाद-बिंदुओं की अपेक्षा होती हैं, अन्य किसी भी उपादान की नहीं। नाद सौन्दर्य जनित आनंद अनंत है, अगाध हैं और उसकी अभिव्यक्ति के साधना भी अनंत है। इस अनंत यात्र के आनंद रूप और प्रकाश पर विचार करने वाला शास्त्र और उस शास्त्र पर आधारित गीत-शैली संगीत के दर्शन के प्रति मनन हेतु आकर्षित ही नहीं करती, अपितु शैलीगत विशेषताओं के साथ रसमग्न कर, अलौकिक जगत का अवगाहन करती है, जहाँ शब्द मौन हो जाते है और संवेदनायें समाधिस्थ।

ऐतिहासिक तत्वों पर सांगीतिक उत्पत्ति का चिंतन करें तो भावमूलक तथ्य ही अधिक स्पष्ट होते हैं, तथ्यपरक कम। अनुमान एवं अनुसंधान के कण से ही हम निष्कर्ष रूप से कुछ तथ्य संजोकर इस कला को समझने का यत्न करते रहे हैं, शैलीगत विभिन्नता हो, रससंवाद हो, सौन्दर्य दृष्टि हो या ताल के विविध आयाम हो परन्तु यह निश्चित है कि संगीत कला का प्रयोजन मात्र अलौकिक सुख की प्राप्ति कराना है शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम, लोक, फिल्म कोई भी धारा हो यदि इस गुण में प्रेरित है तो उसे सम्यक् गीत कहा जाना चाहिए, शेष कोलाहल मात्र होगा। स्वर भाषा ताल, मार्ग का आश्रय लेकर गीत मानव की भावना को व्यक्त करता है, वादक में सहायक और नृत्य उस भावना को मूर्त कर देता है इसीलिये गीत वाद्य नृत्य

Promoting Sustainable Development through Higher Education : An Overview

Editor : Dr. Supriya Singh

Co-Editor : Dr. Kumud Ranjan

11. **Need of Reading Literature in Higher Education** 121-124
Dr. Purnima

12. **Skill Development through Experiential Learning: Concept and Implementation in Education System** 125-134
Dr. Jai Singh

13. **Significance of Traditional Knowledge and Indigenous Pedagogy in Higher Education: A Step towards Sustainability** 135-140
Dr.Sunita Dixit

14. **Holistic Development And Sensitizing Stake Holders** 141-147
Anamita Mitra

15. **Value Education and Skills Development in Relation to Indigenous Enterprises** 148-152
Dr. Priyanka Kumari

16. **Human Resource Development and Skilled Unemployment in India** 153-163
Dr. Akhilesh Kumar Rai

17. **विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण को कैसे बेहतर बनायें?** 164-178
सिद्ध नाथ उपाध्याय

18. **मानवीय मूल्यों का व्यवसायीकरण** 179-182
डॉ0 नन्दिनी वर्मा

19. **उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता** 183-188
डॉ0 ममता मिश्रा

20. **भारत में कौशल विकास एवं मूलपरक शिक्षा : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य** 189-192
डॉ0 पूनम पाण्डेय

21. **शैक्षिक परिदृश्य में कलाओं के समन्वय की आवश्यकता** 193-198
डॉ0 सीमा वर्मा

22. **हिन्दी गीतिनाट्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति** 199-204
डॉ0 शशिकला

✦

21.

शैक्षिक परिदृश्य में कलाओं के समन्वय की आवश्यकता

✦ डॉ० सीमा वर्मा

✦ एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

भारतीय दृष्टिकोण में कला मन से मन का यानि आत्मा का संवाद है और सौन्दर्य इस संवाद का आधार। भारतीय चिन्तकों ने इसे ही कला का आध्यात्मिक पक्ष कहा है आध्यात्मिकता भारतीय कला दृष्टि का प्रमुख तत्व है, जिसमें जीवन जगत के समस्त पार्थिव उपादान एक सौन्दर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर आनंद के अक्षय स्वरूप की निर्मिति करते हैं[1], कला का वास्तविक लक्ष्य ही है, सौन्दर्य एवं आनंद के इस अनंत स्वरूप को जीवन जगत में स्थायी बनाये रखना।

मानव के जीवन का विकास संस्कृति का ही परिणाम है यह संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है इस हस्तान्तरण में संस्कृति का बहुत बड़ा भाग कलाओं के द्वारा मात्र सिंचित ही नहीं होता अपितु पोषित एवं सुरक्षित भी होता है। संस्कृति एवं कलायें एक–दूसरे के पूरक होने के साथ मानव जीवन के विकास के सोपान कहे जा सकते हैं।[2] ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार "संस्कृति के स्तर का माप उसकी कलाओं द्वारा होता है किसी भी राष्ट्र के काव्य, गीत, चित्त, संगीत से पता चलता है कि उस राष्ट्र की संस्कृति किस स्तर की है।[3]

पर्णकुटी से प्रासाद तक बढ़ते हुए मनुष्य ने केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं की अपितु उसने अपने भीतर उत्कृष्ट सौन्दर्य चेतना का विकास किया और शारीरिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर मन की संतृप्ति को अपना लक्ष्य बनाया। पकवान, सुगंधित द्रव्यों की खोज, रंगोली की कला, चाँदी–सोने के आभूषणों का वैचित्र्य चित्र और मूर्ति का निर्माण, इष्ट मित्रों से हास विनोद, कथा और काव्य, ये सब मानव की सतत विकसित कला चेतना के ही विभिन्न स्वरूप हैं। मानसिक दृष्टि से आह्लादकारक ये चेष्टायें मनुष्य के भाव जगत को निरंतर तरलता व सुन्दरता प्रदान करती रही हैं।[4]

भारतीय चिन्तन में कलाओं की कुल संख्या चौसठ मानी गयी है। व्यवहारिक दृष्टि से इन्हें दो विभागों में विभाजित किया गया है–(1) उपयोगी कला (2) ललित कला। ललित कला को अन्य कलाओं की अपेक्षा विशिष्ट

भूमि : अधिकार और अधिग्रहण के प्रश्न

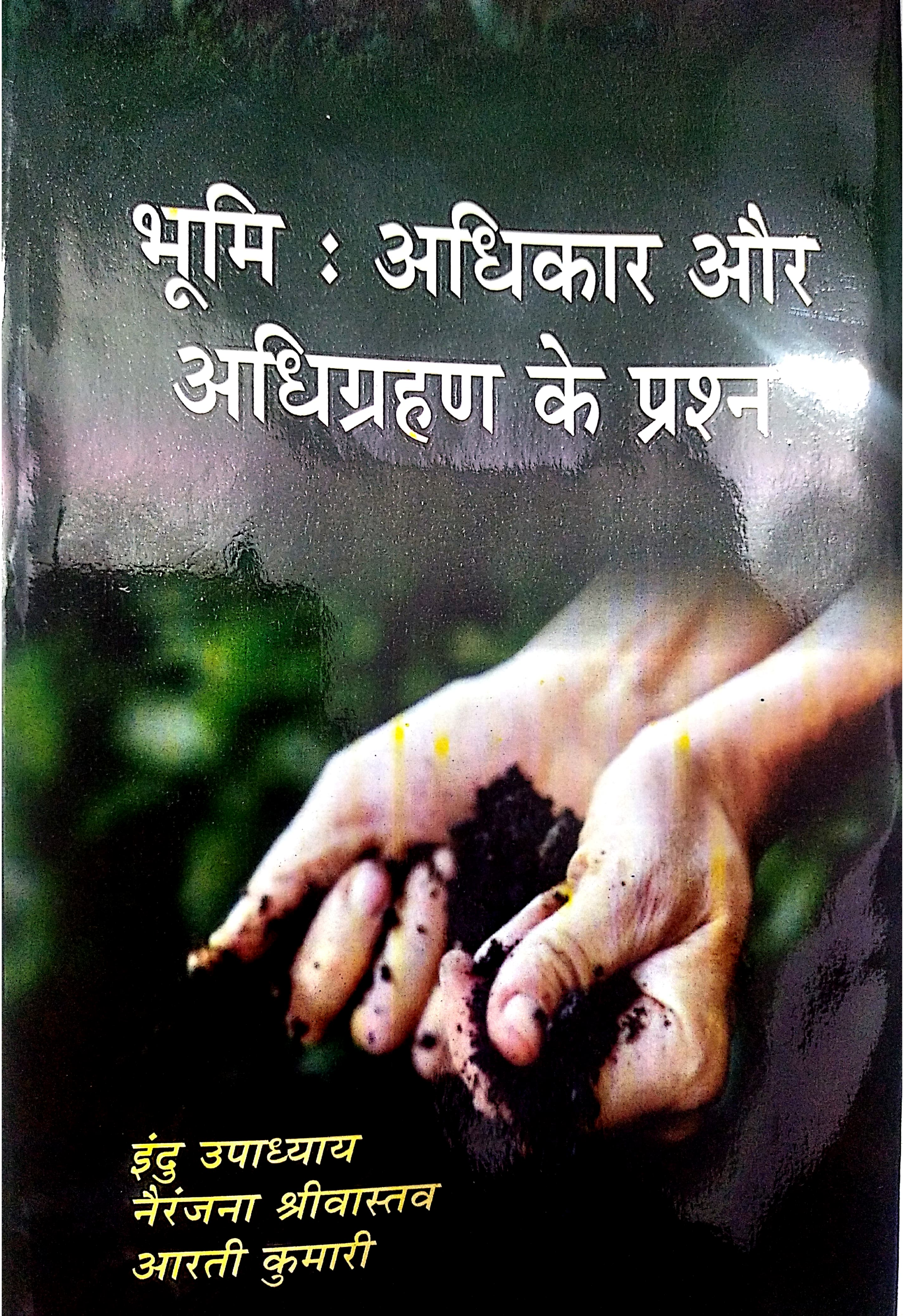

इंदु उपाध्याय
नैरंजना श्रीवास्तव
आरती कुमारी

खंड-2

साहित्य, समाज और भूमि अधिग्रहण

7. भूमि अधिग्रहण एवं हिन्दी उपन्यास 77-81

डॉ0 शशिकला

8. भूमि अधिग्रहण से प्रभावित सांगीतिक संस्कृति 82-88

डॉ0 सीमा वर्मा

9. हिंदी उपन्यासों में भूमि अधिग्रहण 89-93

डॉ0 सुषमा मौर्या

10. भूमि अधिग्रहण का संगीत कला पर प्रभाव 94-98

श्रीमती चेतना नागर

11. प्रेमचन्द और नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित भूमिहीन किसानों की स्थिति 99-104

डॉ0 सपना भूषण

★

8

भूमि अधिग्रहण से प्रभावित सांगीतिक संस्कृति

*डॉ0 सीमा वर्मा

मानव संस्कृति का विकास प्राचीन काल से ही दो मुख्य धाराओं में विभक्त रहा है इनमें से पहली है जनसाधारण की लोक संस्कृति और दूसरी विशिष्ट वर्ग की अभिजात संस्कृति। अभिजात संस्कृति के मूल में भी निहित पहली लोक संस्कृति ही है। लोक संस्कृति की जितनी भी विधाएं हैं यथा लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक संगीत, लोक नृत्य, भित्ति चित्र, विविध प्रकार के थापे, खिलौनें, लोक पात्र, मुहावरें, लोकोक्तियॉ सभी लोक कला अथवा लोक चेतना के दस्तावेज रहे हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत हो या अन्य कलाएं, हस्तशिल्प की तरह हस्तान्तरित होती रही हैं। परम्परा और विकास की लम्बी यात्रा पार करते हुए यही दृष्टिगत होता है इनका ऐतिहासिक सन्दर्भ। मेले–ठेले, तीज–त्यौहार, व्रत संस्कार, साधु, फकीर, नाविक, स्त्रियाँ, प्रकृति श्रृंगार, कथावाचक आदि इसके प्रचार–प्रसार और स्थापना की दिशा में साझेदारी करते आये हैं।

लोक मानव जीवन का वह महत्वपूर्ण अंग है जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पाण्डित्य चेतना तथा अहंकार से शून्य है, यह वह जीवन धारा है जो परम्परा के प्रवाह को जीवित रखती है। लोक का अर्थ है वह महासमुद्र जिसकी भावनाओं, विचारों, परम्पराओं, क्रियाओं एवं मान्यताओं में वास्तविक कल्याण के तत्व विद्यमान रहते हैं। सभ्यता के सृजन के साथ व्यक्ति के हृदय एवं प्रकृति की मनोदशा के अनुकूल मानवीय भावों के चित्रण की मनोवृत्ति 'गेय' रूप में उभरकर आयी। लोक संगीत की ध्वनि, वृक्षों के पत्ते, झरने की कलकल आवाज, पक्षियों की चहचहाहट, मधुर कोकिल की ध्वनि, उमड़ती घटाओं की छटा, रिमझिम बरसात ने हृदय को आह्लाद से भरकर जनसमुदाय को गुनगुनाने के लिए बाध्य किया। इसी मधुर ध्वनि, ताल, लोक कथाओं इत्यादि से साहित्य एवं लोक साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु सभ्यता की कसौटी पर साहित्य तो लिखित हो गया एवं अध्ययन और शोध का विषय बन गया वहीं लोक साहित्य, लोक संगीत मौखिक ही रह गया और सुदूर ग्रामीण–आदिवासी क्षेत्र में ही सिमट कर रह गया। अपने देशीकरण और मूल जड़ों से जकड़न के कारण उसने अपना वर्चस्व बनाये रखा। किसी देश की सभ्यता–संस्कृति को

★ एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन) विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी।

स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक अनुगूँज में सांगीतिक स्वर

डॉ0 सीमा वर्मा
असोसिएट प्राफेसर
संगीत गायन
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी।

भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। समूची विश्व मानवता की अन्तः प्रेरणा को श्रेष्ठ दिशा में प्रेरित करने, सद्गुणों को भली प्रकार विकसित करने की क्षमता उसमें कूट–कूट कर भरी हुई है, वास्तव में भारतीय संस्कृति किसी एक परिभाषा, एक ग्रन्थ, एक देश, एक जाति तक ही सीमित नहीं रह सकी, क्योंकि यह एक स्थूल इकाई नहीं बल्कि युगों से चली आ रही एक विशेष जीवन प्रणाली की जीवन धारा है, जिसके साथ कुछ विशेष मानवमूल्य, जीवनादर्श जुड़ गये हैं। ये मूल्य और 'आदर्श' किसी धार्मिक ग्रन्थ के उपदेश मात्र नहीं, बल्कि युग–युगान्तर के हमारे ऋषि–मुनियों, साधकों, चिन्तकों की साधना, तपस्या चिन्तन से उत्पन्न हुए हैं, जिनका उद्देश्य 'स्व' को पहचानना अर्थात आत्मसाक्षात्कार था। इस दृश्य जगत के पिछे अदृश्य पर चेतन शक्ति की अनुभूति कराना था, जिसे उन्होंने आध्यात्म कहा।[1] हमारे संस्कृति के आध्यात्मिक चिन्तन में आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हुये आत्मा के साक्षात्कार की बात सदा कही गयी, वही सर्वव्यापी है, जड़ चेतन में है, सबमें है, इसलिये सभी जगह ईश्वर का निवास मानकर उदात्त मानवीय गुणों पर, चरित्र निर्माण पर हमारे सभी मनीषियों ने जोर देकर मानव को दर्शन द्वारा महामानव बनने की बात कही है।